तित्थयर

वर्ष २२ अंक-८ नवम्बर १९९८

जैन भवन

'जिसे तुम मारना चाहते हो वह तुम ही हो।'

Sethia Oil Industries Ltd.

Manufacturers of De-oiled Rice Bran, Mustard De-oiled Cakes, Neem deoiled Powder, Ground-nut De-oiled Cakes, Mahua deoiled cakes etc. And Solvent Extracted Rice Bran Oil, Neem Oil, Mustard Oil etc.

Plant
Post Box No. 5
Lucknow Road
Sitapur-261001 (U.P.)
Ph : 42017/42397/42073
(05862)
Gram - Sethia - Sitapur
Fax : 42790 (05862)

Registered Office
143, Cotton Street
Cal-700 007
Ph : 2384329/
8471/5738
Gram - Sethia Meal

Executive Office
2, India Exchange Place
Calcutta-700 001
Ph : 2201001/9146/5055
Telex : 217149 SOIN IN
Fax : 2200248 (033)

तित्थयर

श्रमण संस्कृति मूलक मासिक पत्रिका

जैन भवन
कलकत्ता

वर्ष - २२ अंक - ८, नवम्बर १९९८

संपादन
लता बोथरा

लेख, पुस्तक समीक्षा तथा पत्रिका से सम्बन्धित पत्र व्यवहार के लिये
पता - Editor : **Tithayar**, P-25 Kalakar Street, Calcutta - 700 007

विज्ञापन तथा सदस्यता के लिये कृपया सम्पर्क करें -
Secretary, Jain Bhawan, P-25 Kalakar Street, Calcutta - 700 007
Subscription for one year : Rs. 55.00, US $ 20.00,
for three years : 160.00, US $ 60.00.
Life Membership : India : Rs. 1000.00, Foreign : US $ 160.00.

Published by Lata Bothra on behalf of Jain Bhawan from
P-25 Kalakar Street, Calcutta - 700 007 and Printed by her
at Surana Printing Works, 205 Rabindra Sarani
Calcutta - 700 007, Phone : 239-4393

अनुक्रमणिका

क्र.मं.	लेख	लेखक	पृ. सं.
१.	जैन धर्म का प्राचीन इतिहास	डा॰ हीरालाल जैन	१७३
२.	श्रावक जीवन	आचार्यश्री विजयभद्र गुप्त सूरीश्वरजी	१८१
३.	राजा सम्प्रति	--	१८७

आवरण चित्र-पाकबिरा से ७वीं से १०वीं शताब्दी की प्राप्त जैन मूर्तियाँ एवं मन्दिर ।

Composed by
COMPU LASER GRAPHICS, 9, Srimani Ghat Lane, Rishra-712248, Hooghly.

पुढवी-जीवा पुढो सत्ता, आउजीवा तहाऽगणी ।
वाउजीवा पुढो सत्ता, तण-रूक्खा सबीयगा ॥७॥

पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और बीज सहित तृण, वृक्ष आदि वनस्पतिकाय—ये सब जीव अति सूक्ष्म हैं, ऊपर से एक आकार के दीखने पर भी सब का पृथक्-पृथक् अस्तित्व है ।

जैन धर्म का प्राचीन इतिहास

डा हीरालाल जैन

महावीर की संघ-व्यवस्था और उपदेश–

महावीर भगवान ने अपने अनुयायियों को चार भागों में विभाजित किया– मुनि, आर्यिका, श्रावक और श्राविका । प्रथम दो वर्ग गृहत्यागी परिव्राजकों के थे और अन्तिम दो गृहस्थों के । यही उनका चतुर्विघ-संघ कहलाया । उन्होंने मुनि और गृहस्थ धर्म की अलग अलग व्यवस्थाएं बांधी । उन्होंने धर्म का मूलधार अहिंसा को बनाया और उसी के विस्तार रूप पांच व्रतों को स्थापित किया-अहिंसा, अमृषा, अचौर्य, अमैथुन और अपरिग्रह । इन व्रतों व यमों का पालन मुनियों के लिए पूर्णरूप से महाव्रतरूप बतलाया तथा गृहस्थों के लिए स्थूलरूप-अणुव्रत रूप । गृहस्थों के भी उन्होंने श्रेद्धान् मात्र से लेकर, कोपीनमात्र धारी होने तक के ग्यारह दर्जे नियत किए । दोषों और अपराधों के निवारणार्थ उन्होंने नियमित प्रतिकमण पर जोर दिया ।

भगवान महावीर द्वारा उपदिष्ट तत्वज्ञान को संक्षेप में इसप्रकार व्यक्त किया जा सकता है :– जीव और अजीव अर्थात् चेतन और जड़, ये दो विश्व के मूल तत्व हैं, जो आदितः परस्पर संबंद्ध पाए जाते हैं, ओर चेतन की मन-वचन व कायात्मक क्रियाओं द्वारा इस जड़-चेतन संबन्ध की परम्परा प्रचलित रहती है । इसे ही कर्माश्रव व कर्मबंध कहते हैं । यमों, नियमों आदि के पालन द्वारा इस कर्माश्रव की परम्परा को रोका जा सकता है, एवं संयम व तप द्वारा प्राचीन कर्मबंध को नष्ट किया जा सकता है । इस प्रकार चेतन का जड़ से सर्वथा मुक्त होकर, अपना अनन्तज्ञान-दर्शनात्मक स्वरूप प्राप्त कर लेना ही जीवन का परम लक्ष्य होना चाहिए, जिससे इस जन्म-मृत्यु की परम्परा का विच्छेद होकर मोक्ष या निर्वाण की प्राप्ति हो सके ।

महावीर ने अपने उपदेश का माध्यम उस समय उनके प्रचार क्षेत्र में सुप्रचलित लोकभाषा अर्द्धमागधी को बनाया । इसी भाषा में उनके शिष्यों

ने उनके उपदेशों को आचारांगादि बारह अंगों में संकलित किया जो द्वादशांग आगम के नाम से प्रसिद्ध हुआ ।

महावीर निर्वाण काल–

जैन परम्परानुसार महावीर का निर्वाण विक्रमकाल से ४७० वर्ष पूर्व तथा शक काल से ६०५ वर्ष पांच मास पूर्व हुआ था, जो सन् ईसवी से ५२७ वर्ष पूर्व पड़ता है । यह महावीर निर्वाण संवत् आज भी प्रचलित है और उसके ग्रंथों व शिलालेखों में उपयोग की परम्परा, कोई पांचवी छठवीं शताब्दी से लगातार पाई जाती है । इसमें सन्देह उत्पन्न करनेवाला केवल एक हेमचन्द्र के परिशिष्ट पर्व का उल्लेख है जिसके अनुसार महावीर निर्वाण से १५५ वर्ष पश्चात् चन्द्रगुप्त (मौर्य) राजा हुआ । और चूंकि चन्द्रगुप्त से विक्रमादित्य का काल सर्वत्र २५५ वर्ष पाया जाता है, अतः वीर निर्वाण का समय विक्रम से २५५+१५५=४१० वर्ष पूर्व (ई॰ पू॰ ४६७) ठहरा । याकोबी, चार्पेटियर आदि पाश्चात्य विद्वानों का यही मत है । इसके विपरीत डा॰ जायसवाल का मत है कि चूंकि निर्वाण से ४७० वर्ष पश्चात् विक्रम का जन्म हुआ और १८ वर्ष के होने पर उसके राज्याभिषेक से उनका संवत् चला, अतएव विक्रम संवत् के ४७०+१८=४८८ वर्ष पूर्व वीर निर्वाण मानना चाहिए । वस्तुतः ये दोनों ही मत भ्रांत हैं । अधिकांश जैन उल्लेखों से सिद्ध होता है कि विक्रम जन्म से १८ वर्ष पश्चात् अभिषिक हुए और ६० वर्ष तक राज्यारूढ़ रहे, एवं उनका संवत् उनकी मृत्यु से प्रारंभ हुआ और उसी से ४७० वर्ष पूर्व वीर निर्वाण का काल है ।

वीर निर्वाण से ६०५ वर्ष ५ माह पश्चात् जो शक सं॰ का प्रारम्भ कहा गया है, उसका कारण यह है कि महावीर का निर्वाण कार्तिक की अमावस्या को हुआ और इसीलिए प्रचलित वीर निर्वाण का संवत् कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा से बदलता है । इससे ठीक ५ माह पश्चात् चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से शक संवत् प्रारम्भ होता है । शक संवत् ७०५ में रचित जिनसेन कृत सं॰ हरिवंश पुराण में वर्णन है कि महावीर के निर्वाण होने पर उनकी निर्वाणभूमि पावानगरी में दीपमालिका उत्सव मनाया गया और उसी समय से भारत में उक्त तिथि पर प्रतिवर्ष इस उत्सव के मनाने की प्रथा चली । इस दिन जैन लोग निर्वाणोत्सव दीपमालिका द्वारा मनाते हैं और महावीर की पूजा का विशेष आयोजन करते हैं । जहां तक पता चलता है दीपमालिका उत्सव

जो भारतवर्ष का सर्वव्यापी महोत्सव वन गया है, उसका इससे प्राचीन अन्य कोई साहित्यिक उल्लेख नहीं है।

गौतम-केशी-संवाद–

महावीर निर्वाण के पश्चात् जैन संघ के नायकत्व का भार क्रमशः उनके तीन शिष्यों-गौतम, सुधर्म और जंबू ने संभाला। इनका काल क्रमशः १२, १२ व ३८ वर्ष=६२ वर्ष पाया जाता है। यहांतक आचार्य परम्परा में कोई भेद नहीं पाया जाता। इससे भी इन तीनों गणधरों की केवली संज्ञा सार्थक सिद्ध होती है। किन्तु इनके पश्चात्कालीन आचार्य परम्पराएँ, दिगम्बर व श्वेताम्बर सम्प्रदायों में पृथक पृथक पाई जाती है, जिससे प्रतीत होता है कि सम्प्रदाय भेद के बीज यहीं से प्रारम्भ हो गए। इस सम्प्रदाय-भेद के कारणों की एक झलक हमें उत्तराध्ययन सूत्र के 'केसी-गोयम संवाद' नामक २३वें अध्ययन में मिलती है। इसके अनुसार ऐसा प्रतीत होता है कि जिस समय पार्श्वनाथ का प्राचीन सम्प्रदाय प्रचलित था। हम ऊपर कह आए हैं कि स्वयं भगवान् महावीर के माता-पिता उसी पार्श्व सम्प्रदाय के अनुयायी माने गए हैं, और उसी से स्वयं भगवान् महावीर भी प्रभावित हुए थे। उत्तराध्ययन के उक्त प्रकरण के अनुसार, जब महावीर के सम्प्रदाय के अधिनायक गौतम थे, उस समय पार्श्व सम्प्रदाय के नायक थे केशी कुमार श्रमण। इन दोनों गणधरों की भेंट श्रावस्तीपुर में हुई और उन दोनों में यह विचार उत्पन्न हुआ कि सम्प्रदाय एक होते हुए भी क्या कारण है कि पार्श्व-सम्प्रदाय चाउज्जाम धर्म तथा वर्द्धमान का सम्प्रदाय 'पंचसिक्खिय' कहा गया है। उसी प्रकार पार्श्व का धर्म 'संतरोत्तर' तथा वर्द्धमान का 'अचेलक' धर्म है। इसप्रकार एक-कार्य-प्रवृत्त होने पर भी दोनों में विशेषता का कारण क्या है ? केशी कुमार के इस संबध में प्रश्न करने पर, गौतम गणधर ने बतलाया कि पूर्वकाल में मनुष्य सरल किन्तु जड़ (ऋजु जड़) होते थे और पश्चिमकाल में वक्रऔर जड़, किन्तु मध्यमकाल के लोग सरल और समझदार (ऋजु प्राज्ञ) थे। अतएव पुरातन लोगों के लिए धर्म की शोध कठिन थी और पश्चात्कालीन लोगों को उसका अनुपालन कठिन था। किन्तु मध्यकाल के लोगों के लिए धर्म शोधने और पालने में सरल प्रतीत हुआ। इसीकारण एक ओर आदि व अन्तिम तीर्थंकरों ने पंचव्रत रूप तथा मध्य के तीर्थंकरों ने उसे चातुर्याम रूप से स्थापित किया। उसी प्रकार उन्होंने बतलाया कि

अचेलक या संस्तर युक्त वेष तो केवल लोगों में पहचान आदि के लिए नियत किए जाते हैं, किन्तु यथार्थतः मोक्ष के कारणभूत तो ज्ञान, दर्शन और चरित्र हैं। गौतम और केशी के बीच इस वार्तालाप का परिणाम यह बतलाया गया है कि केशी ने महावीर का पंचमहाव्रत रूप धर्म स्वीकार कर लिया। किन्तु उनके बीच वेश के संबंध में क्या निर्णय हुआ, यह स्पष्ट नहीं बतलाया गया। अनुमानतः इस संबंध में अचेलकत्व और अल्पवस्त्रत्व का कल्प अर्थात् इच्छानुसार ग्रहण की बात स्वीकार कर ली गई, जिसके अनुसार हमें स्थविर कल्प और जिनकल्प के उल्लेख मिलते हैं। स्थविर कल्प पार्श्व-परम्परा का अल्प-वस्त्र-धारण रूप मान लिया गया और जिनकल्प सर्वथा अचेलक रूप महावीर की परम्परा का। किन्तु स्वभावतः एक सम्प्रदाय में ऐसा द्विविध कल्प बहुत समय तक चल सकना संभव नहीं था। बहुत काल तक इस प्रश्न का उठना नहीं रूक सकता था कि यदि वस्त्रधारण करके भी महाव्रती बना जा सकता है और निर्वाण प्राप्त किया जा सकता है, तब अचेलकता की आवश्यकता ही क्या रह जाती है? इसी संघर्ष के फलस्वरूप महावीर निर्वाण से ६२ वर्ष पश्चात् जंबू स्वामी का नायकत्व समाप्त होते ही संघभेद हुआ प्रतीत होता है। दिगम्बर परम्परा में महावीर निर्वाण के पश्चात् पूर्वोक्त तीन केवली; विष्णु आदि पांच श्रुतकेवली, विशाखाचार्य आदि ग्यारह दशपूर्वी, नक्षत्र आदि पांच एकादश अंगधारी, तथा सुभद्र आदि लोहार्य पर्यन्त चार एकांगधारी आचार्यो की वंशावली मिलती है। इन समस्त अट्ठाइस आचार्यो का काल ६२+१००+१८३+२२०+ ११८=६८३ वर्ष निर्दिष्ट पाया जाता है।

श्वेताम्बर सम्प्रदाय के गणभेद—

जैन संघ संबंधी श्वेताम्बर परम्परा का प्राचीनतम उल्लेख कल्पसूत्र अन्तर्गत स्थविरावली में पाया जाता है। इसके अनुसार श्रमण भगवान महावीर के ग्यारह गणधर थे। इन्द्रभूति गौतम आदि ग्यारहों गणधरों द्वारा पढ़ाए गए श्रमणों की संख्या का भी उल्लेख है। ये ग्यारहों गणधर १२ अंग और १४ पूर्व, इस समस्त गणिपिटक के धारक थे, जिसके अनुसार उनके कुल श्रमण शिष्यों की संख्या ४२०० पाई जाती है। इन ग्यारहों गणधरों में से नौ का निर्वाण महावीर के जीवनकाल में ही हो गया था। केवल दो अर्थात् इन्द्रभूति गौतम और आर्य सुधर्म ही महावीर के पश्चात्

जीवित रहे । यह भी कहा गया है कि आज जो भी श्रमण निर्ग्रन्थ विहार करते हुए पाए जाते हैं, वे सब आर्य सुधर्म मुनि के ही अपत्य हैं । शेष गणधरों की कोई सन्तान नहीं चली । आगे स्थविरावली में आर्य सुधर्म से लगाकर आर्य शाण्डिल्य तक तेंतीस आचार्यों की गुरू-शिष्य परम्परा दी गई है । छठे आचार्य आर्य यशोभद्र के दो शिष्य संभूतिविजय और भद्रबाहु द्वारा दो भिन्न शिष्य परम्पराएँ चल पड़ीं । आर्य संभूतिविजय की शाखा में नौवें स्थविर आर्य वज्रसेन के चार शिष्यों द्वारा चार भिन्न-भिन्न शाखाएं स्थापित हुई, जिनके नाम उनके स्थापकों के नामानुसार नाइल, पोमिल, जयन्त और तावस पड़े । उसी प्रकार आर्य भद्रबाहु के चार शिष्यों द्वारा ताम्रलिप्तिका, कोटिवर्षिका, पौन्ड्रवर्द्धनिका और दासीखबडिका, ये चार शाखाएं स्थापित हुई । उसी प्रकार सातवे स्थविर आर्य स्थूलभद्र के रोहगुप्त नामक शिष्य द्वारा 'तेरासिय' शाखा एवं उत्तर बलिस्सह द्वारा उत्तर बलिस्सह नामक गण निकले, जिसकी पुनः कौशाम्बिक, सौवर्तिका, कोडंबाणो और चंद्रनागरी, ये चार शाखाएं फूटी । स्थूलभद्र के दूसरे शिष्य आर्य सुहस्ति के शिष्य रोहण द्वारा उद्देह गण की स्थापना हुई, जिससे पुनः उदुंबरिज्जिका आदि चार-उपशाखाएं और नागभूत आदि छह कुल निकले । आर्य सुहस्ति के श्रीगुप्त नामक शिष्य द्वारा चारण गण और उसकी हार्यमालाकारी आदि चार शाखाएं एवं बर्थलीय आदि सात कुल उत्पन्न हुए । आर्य सुहस्ति के यशोभद्र नामक शिष्य द्वारा उडुवाडिय गण की स्थापना हुई, जिसकी पुनः चंपिज्जिया आदि चार शाखाएं और भद्रयशीय आदि तीन कुल उत्पन्न हुए। उसी प्रकार आर्य सुहस्ति के कामर्द्धि नामक शिष्य द्वारा वेसवाडिया गण उत्पन्न हुआ, जिसकी श्रावस्तिका आदि चार शाखाएं और गणिक आदि चार कुल स्थापित हुए । उन्हीं के अन्य शिष्य ऋषिगुप्त द्वारा माणव गण स्थापित हुआ, जिसकी कासवार्यिका गौतमार्यिका, वासिष्ठिका और सौराष्ट्रिका, ये चार शाखाएं तथा ऋषिगुप्ति आदि चार कुल स्थापित हुए । शाखाओं के नामों पर ध्यान देने से अनुमान होता है कि कही-कही स्थान भेद के अतिरिक्त गोत्र-भेदानुसार भी शाखाओं के भेद प्रभेद हुए । स्थविर सुस्थित द्वारा कोटिकगण की स्थापना हुई, जिससे उच्चानागरी, विद्याधरी, वज्री एवं माध्यमिका ये चार शाखाएं तथा बम्हलीय, वत्थालीय वाणिज्य और पण्हवाहेक, ये चार कुल उत्पन्न हुए । इस प्रकार आर्य सुहस्ति के शिष्यों

द्वारा बहुत अधिक शाखाओं और कुलों के भेद प्रभेद उत्पन्न हुए । आर्य सुस्थित के अर्हद्दत्त द्वारा मध्यमा शाखा स्थापित हुई और विद्याधर गोपाल द्वारा विद्याधरी शाखा । आर्यदत्त के शिष्य शांतिसेन ने एक अन्य उच्चानागरी शाखा की स्थापना की । आर्य शांतिसेन के श्रेणिक तापस, कुवेर और ऋषिपालिका ये चार शिष्य हुए, जिनके द्वारा क्रमशः आर्यसेनिका, तापसी कुबेर और ऋषिपालिका ये चार शाखाएं निकली । आर्य-सिंहगिरि के शिष्य आर्य शमित द्वारा ब्रह्मदीपिका तथा आर्य वज्र द्वारा आर्य वज्री शाखा स्थापित हुई । आर्य-वज्र के शिष्य वज्रसेन, पद्म और रथ द्वारा क्रमशः आर्य-नाइली पद्मा और जयन्ती नामक शाखाएं निकली । इन विविध शाखाओं व कुलों के स्थान व गोत्र आदि भेदों के अतिरिक्त अपनी अपनी क्या विशेषता थी, इसका पूर्णतः पता लगाना संभव नहीं है । इनमें ये किसी किसी शाखा व कुल के नाम मथुरा के कंकाली टीले से प्राप्त मूर्तियों आदि के लेखों में पाए गए हैं, जिनसे उनकी ऐतिहासिकता सिद्ध होती है ।

प्राचीन ऐतिहासिक कालगणना–

कल्पसूत्र स्थविराबली में उक्त आचार्य परम्परा के संबंध में काल का निर्देश नहीं पाया जाता । किन्तु घर्मघोषसूरि कृत दुषमकाल-श्रमणसंघ-स्तव नामक प्राकृत पट्टावली की अवचूरि में कुछ महत्वपूर्ण कालसंबंधी निर्देश पाए जाते हैं । यहां कहा गया है कि जिस रात्रि भगवान महावीर का निर्वाण हुआ, उसी रात्रि को उज्ञैनी में चंडप्रद्योत नरेश की मृत्यु व पालक राजा का अभिषेक हुआ । इस पालक राजा ने उदायी के निःसंतान मरने पर कुणिक के राज्य पर पाटलिपुत्र में अधिकार कर लिया और ६० वर्ष तक राज्य किया । इसीकाल में गौतम ने १२, सुधर्म ने ८, और जंबू ने ४४ वर्ष तक युगप्रधान रूप से संघ का नायकत्व किया । पालक के राज्य के साठ वर्ष व्यतीत होने पर पाटलिपुत्र में नव नंन्दों ने १५५ वर्ष राज्य किया और इसी काल में जैन संघ का नायकत्व प्रभव ने ११ वर्ष, स्वयंभू ने २३, यशोभद्र ने ५०, संभूतिविजय ने ८, भद्रबाहु ने १४ और स्थूलभद्र ने ४५ वर्ष तक किया । इस प्रकार यहां तक वीर निर्वाण के २१५ वर्ष व्यतीत हुए। इसके पश्चात् मौर्य वंश का राज्य १०८ वर्ष रहा, जिसके भीतर महागिरि ने ३० वर्ष, सुहस्ति ने ४६ और गुणसुंदर ने ३२ वर्ष जैन संघ का नायकत्व किया । मौर्यो के पश्चात् राजा पुष्यमित्र ने ३० वर्ष तथा बलमित्र और

भानुमित्र ने ६० वर्ष राज्य किया। इस बीच गुणसुंदर ने अपनी आयु के शेष १२ वर्ष, कालिक ने ४० वर्ष और स्कंदिल ने ३८ वर्ष जैन संघ का नायकत्व किया। इसप्रकार महावीर निर्वाण से ४१३ वर्ष व्यतीत हुए। भानुमित्र के पश्चात् राजा नरवाहन ने ४०, गर्दभिल्ल ने १३ और शक ने ४ वर्ष पर्यन्त राज्य किया और इसी बीच रेवतीमित्र द्वारा ३६ वर्ष तथा आर्य-मंगु द्वारा २० वर्ष जैन संघ का नायकत्व चला। इस प्रकार महावीर निर्वाण से लेकर ४७० वर्ष समाप्त हुए। गर्दभिल्ल के राज्य की समाप्ति कालकाचार्य द्वारा कराई गई और उसके पुत्र विक्रमादित्य ने राज्यारूढ़ होकर, ६० वर्ष तक राज्य किया। इसी बीच जैन संघ में बहुल, श्रीव्रत, स्वाति, हारि, श्यामार्य एवं शाण्डिल्य आदि हुए, प्रत्येकबुद्ध एवं स्वयंबुद्ध परम्परा का विच्छेद हुआ, बुद्धबोधितों की अल्पता, तथा भद्रगुप्त, श्रीगुप्त और वज्रस्वामी, ये आचार्य हुए। विक्रमादित्य के पश्चात् धर्मादित्य ने ४० और माइल्ल ने ११ वर्ष राज्य किया, और इस प्रकार वीर निर्वाण के ५८१ वर्ष व्यतीत हुए। तत्पश्चात् दुर्वलिका पुष्पमित्र के २० वर्ष तथा राजा नाइड के ४ (?) वर्ष समाप्त होने पर वीर निर्वाण से ६०५ वर्ष पश्चात् शक संवत् प्रारम्भ हुआ। वीर निर्वाण के ९९३ वर्ष व्यतीत होने पर कालकसूरि ने पर्यूषण चतुर्थी की स्थापना की, तथा निर्वाण के ९८० वर्ष समाप्त होने पर आर्यमहागिरि की संतान में उत्पन्न श्री देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण ने कल्पसूत्र की रचना की, एवं इसी वर्ष आनंदपुर में ध्रुवसेन राजा के पुत्र-मरण से शोकार्त होने पर, उनके समाधान हेतु कल्पसूत्र सभा के समक्ष कल्पसूत्र की वाचना हुई। यह बहुश्रुतों की परम्परा से ज्ञान हुआ। इतनी वार्ता के पश्चात् यह 'दुषमकाल श्रमणसंघस्तव की अबचूरि' इस समाचार के साथ समाप्त होती है कि वीर निर्वाण के १३०० वर्ष समाप्त होने पर विद्वानों के शिरोमणि श्री बप्पभट्टि सूरि हुए।

सात निन्हव व दिगम्बर-श्वेताम्बर सम्प्रदाय–

ऊपर जिन गणों कुलों व शाखाओं का उल्लेख हुआ है, उनमें कोई विशेष सिद्धान्त-भेद नहीं पाया जाता। सिद्धान्त-भेद की अपेक्षा से हुए सात निन्हवों का उल्लेख पाया जाता है। पहला निन्हव महावीर के जीवनकाल में ही उनकी ज्ञानोत्पति के चौदह वर्ष पश्चात् उनके एक शिष्य जमालि द्वारा श्रावस्ती में उत्पन्न हुआ। इस निन्हव का नाम बहुरत कहा गया,

क्योंकि यहां मूल सिद्धान्त यह था कि कोई वस्तु एक समय की क्रिया से उत्पन्न नहीं होती, अनेक समयों में उत्पन्न होती है। दूसरा निन्हव इसके दो वर्ष पश्चात् तिष्यगुप्त द्वारा ऋषभपुर में उत्पन्न हुआ कहा गया है। इसके अनुयायी जीवप्रदेशक कहलाए, क्योंकि वे जीव के अंतिम प्रदेश को ही जीव की संज्ञा प्रदान करते थे। अव्यक्त नामक तीसरा निन्हव, निर्वाण से २१४ वर्ष पश्चात् आषाढ़-आचार्य द्वारा श्वेतविका नगरी में स्थापित हुआ। इस मत में वस्तु का स्वरूप अव्यक्त अर्थात् अस्पष्ट व अज्ञेय माना गया है। चौथा समुच्छेद नामक निन्हव, निर्वाण से २२० वर्ष पश्चात् अश्वमित्र-आचार्य द्वारा मिथिला नगरी में उत्पन्न हुआ। इसके अनुसार प्रत्येक कार्य अपने उत्पन्न होने के अनन्तर समय में समस्त रूप से व्युच्छिन्न हो जाता है, अर्थात् प्रत्येक उत्पादित वस्तु क्षणस्थायी है। यह मत बौद्ध दर्शन के क्षणिकत्ववाद से मेल खाता प्रतीत होता है। पांचवां निन्हव निर्वाण के २२५ वर्ष पश्चात् गंग-आचार्य द्वारा उल्लुकातीर पर उत्पन्न हुआ। इसका नाम द्विक्रिया कहा गया है। इस मत का मर्म यह प्रतीत होता है कि एक समय में केवल एक ही नहीं, दो क्रियाओं का अनुभवन संभव है। छठवां त्रैराशिक नामक निन्हव, छुल्लुक मुनिद्वारा पुरमंतरंजिका नगरी में उत्पन्न हुआ। इस मत के अनुयायी वस्तुविभाग तीन रशियों में करते थे; जैसे जीव, अजीव, और जीवाजीव। सातवां निन्हव अबद्ध कहलाता है, जिसकी स्थापना वी° निर्वाण ५८४ वर्ष पश्चात् गोष्ठा माहिल द्वारा दशपुर में हुई। इस मत का मर्म यह प्रतीत होता है कि कर्म का जीव से स्पर्शमात्र होता है, बंधन नहीं होता। इन सात निन्हवों के अनन्तर, वीर निर्वाण के ६०९ वर्ष पश्चात्, बोटिक निन्हव अर्थात दिगम्बर संघ की उत्पत्ति कही गई है (स्था ७, वि° आवश्यक व तपा° पट्टा°)। दिगम्बर परम्परा में उपर्युक्त सात निन्हवों का तो कोई उल्लेख नहीं पाया जाता, किन्तु वि° सं° के १३६ वर्ष उपरान्त श्वेताम्बर संघ की उत्पत्ति होने का स्पष्ट उल्लेख (दर्शनुसार गा° ११) पाया जाता है। इस प्रकार श्वेताम्बर परम्परा में दिगम्बर सम्प्रदाय की उत्पत्ति के काल में, व दिगम्बर परम्परा में श्वेताम्बर सम्प्रदाय के उत्पत्तिकाल–निर्देश में केवल ३ वर्षो का अन्तर पाया जाता है। इन उल्लेखों पर से यह अनुमान करना अनुचित न होगा कि महावीर के संघ में दिगम्बर-श्वेताम्बर सम्प्रदायों का स्पष्ट रूप से भेद निर्वाण से ६०० वर्ष पश्चात् हुआ।

क्रमशः

श्रावक जीवन

आचार्य श्री विजयभद्र गुप्त सूरीश्वरजी

सामायिक में काया निष्पाप रहती है :

कुछ लोग प्रश्न करते हैं : 'हमारा मन, सामायिक में भी पाप विचार करता है...चूंकि मन चंचल है, तो फिर सामायिक करना बेकार है न ? नहीं करना ही अच्छा है... ।'

ऐसा नहीं है । सामायिक का प्रयोजन मात्र मनोयोग को ही निष्पाप बनाने का नहीं है, वचनयोग और काययोग को भी निष्पाप बनाने का है। भले आपका मन स्थिर नहीं रहना है सामायिक में, शरीर तो दो घड़ी एक जगह स्थिर बैठेगा न ? दो घड़ी शरीर से तो पाप नहीं होंगे न ? क्या यह लाभ छोटा है ? दो घड़ी शरीर को पापों से मुक्त रखनेवाला सामायिक करने जैसा नहीं है क्या ? शरीर को पापों से मुक्त रखनेवाली धर्मक्रिया का महत्व कम मत समझो । कदम-कदम पर पाप करनेवाला शरीर, दो घड़ी निष्पाप बना रहता है, यह बड़ी महत्व की बात है ।

इतना ही नहीं, दो घड़ी सामायिक में आप मौन तो बैठ सकते हो न ? मन का मौन नहीं सही, वचन का मौन धारण कर सकते हो न ? ४८ मिनट का मौन क्या कम महत्व का है ? मौन का महत्व धार्मिक दृष्टि से नहीं, शारीरिक दृष्टि से, आरोग्य की दृष्टि से भी बड़ा महत्वपूर्ण माना गया है । मौन से वचनशक्ति बढ़ती है, मौन से विचारशक्ति भी बढ़ती है ।

भले मन चंचल है आप का, और आप विचारों को रोक नहीं पाते हैं परंतु वाणी को तो रोक सकते हो न ? वचनयोग को निष्पाप बनाये रख सकते हो न ? इस दृष्टि से भी सामायिक सार्थक होगा आप का । और ज्यों ज्यों शरीर और वाणी निष्पाप एवं स्थिर बनते जायेंगे त्यों त्यों मन भी निष्पाप और स्थिर बनता जायेगा । हालांकि मन को सुधरने में समय लगेगा... मंद गति से सुधरेगा, परंतु सुधरेगा अवश्य । इसलिए 'सामायिक-व्रत' लेना अत्यन्त आवश्यक है ।

सामायिक व्रत की प्रतिज्ञा :

सामायिक व्रत आप इस प्रकार ले सकते हैं : मैं प्रतिदिन एक या एक से ज्यादा सामायिक करूंगा। अथवा मैं महीने में...इतने सामायिक करूंगा। अथवा मैं वर्ष में...इतने सामायिक करूंगा। बिमारी वगैरह अपरिहार्य कारणों से नहीं करूंगा-इतना अपवाद।

वास्तव में देखा जाय तो बिमारी में बहुत अच्छा सामायिक हो सकता है। जितना समय समताभाव में रह सको-उतना सामायिक हो जाता है। वह भाव सामायिक कहा जायेगा। क्रियारूप सामायिक नहीं हो सकता हो उस समय, दो घड़ी मन को राग-द्वेष से मुक्त रख कर भाव-सामायिक कर सकते हो।

भाव सामायिक कर सकते हैं :

एक भाई, जो कि अच्छे व्यापारी हैं, श्रीमंत हैं, उन्होंने मुझे बताया कि वे पुना-बंबई प्रतिदिन अप-डाऊन करते थे। इन्होंने प्रतिज्ञा की थी ट्रेन में मैं किसी से कोई बात नहीं करूंगा और जिस सीट पर बैठा, उस सीट पर से जब तक बंबई नहीं आये और बंबई से जाते समय पूना नहीं आये, तब तक उठूंगा नहीं। वे सीट पर बैठ कर मन को स्वाध्याय में जोड़ते थे। मन में राग-द्वेष को प्रवेश ही नहीं देते थे। राग-द्वेष रहित मन शमयुक्त बनता है और वही सामायिक बनता है। तीन-चार घंटे जाने के और तीन-चार घंटे आने के सामायिकरूप बना दिए उन्होंने !

परिणामस्वरूप, आज ६५ वर्ष की उम्र में उन्होंने ऑफिस जाना छोड़ दिया है...बिजनेस में रूचि नहीं रही है और प्रतिदिन घर में पांच सामायिक करते हैं। शेष समय भी समताभाव में बिताने का प्रयत्न करते हैं। संसार में कोई न कोई समस्या तो रहती है, फिर भी वे अपना समताभाव बनाये रखते हैं।

द्रव्य क्रियात्मक सामायिक करने का लक्ष्य भाव सामायिक ही है। भाव सामायिक का लक्ष्य नहीं होता है और मात्र द्रव्य सामायिक करनेवाले अपने मन में शान्ति नहीं पाते हैं और दूसरों के सामने गलत उदाहरण प्रस्तुत करने है। जैसे कि

– सामायिक पूर्ण करते ही लड़ते-झगड़ते हैं,
– सामायिक पूर्ण करते ही असत्य बोलते हैं,

– सामायिक पूर्ण होते ही किसी को मारते हैं,
– सामायिक करते-करते संसार की बातें करते हैं,
– सामायिक करते-करते क्रोध करते हैं,
– सामायिक करते-करते नींद लेते हैं,
– सामायिक में प्रमाद से बैठते हैं...

इस प्रकार सामायिक की क्रिया करनेवालों को देख कर बुद्धिशाली और पढ़े लिखे लोग सामायिक से नफरत करने लगते हैं । और ऐसी क्रिया करनेवाला व्यक्ति कभी भी भाव सामायिक कर नहीं पाता है । चूंकि भाव सामायिक उसका लक्ष्य ही नहीं होता है !

भाव सामायिक 'समतायोग' में परिवर्तित हो जाता है ! और समतायोग में स्थिर बनने पर वीतरागता प्राप्त होने में देर नहीं लगती ।

सामायिक में से समतायोग :

शास्त्रों में ऐसे अनेक दृष्टान्त आते हैं कि घोर कष्टों में भी समता रखी... राग-द्वेष से मन को मुक्त रखा...और वे वीतराग-सर्वज्ञ बन गए । उन दृष्टान्तों में से एक दृष्टान्त है आचार्यश्री चंडरूद्र के शिष्यरत्न का ।

नगर के बाह्य उद्यान में आचार्य अपने शिष्यों के साथ ठहरे थे । आचार्य, अपने शिष्यों से अलग स्थान में रहे थे । उनका स्वभाव अति उग्र था । हालांकि वे ज्ञानी थे, तपस्वी थे, परन्तु क्रोध पर वे विजय नहीं पा सके थे । वे जानते थे अपने स्वभाव को, इसलिए वैसे निमित्तों से वे दूर रहना ही पसंद करते थे ।

एकदिन कुछ युवक उस उद्यान में घूमने को गए । उन में एक युवक उसी दिन शादी कर के आया था । युवक ...आचार्य चंडरूद्र के पास जाकर मजाक के मुड में बोले : 'महाराज, आप को शिष्य चाहिए क्या ?' आचार्य मौन रहे । युवकों ने फिर से पूछा : 'महाराज, यदि शिष्य चाहिए तो यह लड़का तैयार है...' ऐसा बोल कर उस शादी करके आए हुए लड़के को आगे कर दिया । आचार्य ने जवाब नहीं दिया । तीन बार वे खामोश रहे । परन्तु युवकों ने आचार्य को परेशान करना चालू रखा । आचार्य का प्रचंड क्रोध धधकती आग की तरह जग उठा और उन्होंने उस युवक को पकड़ कर उस के बालों का लुंचन कर डाला, साधु वेश भी पहना दिया !

दूसरे लड़के घबरा गए ! 'शायद हम को भी यह साधु पकड़ कर मुंडन

कर देगा...' वे भाग गए गांव में। जिस को साधु बनाया था, उस युवक ने सोचा : 'अब, जब मैं स्वयं साधु बन गया हूं तो अब मुझे यह वेश छोड़ना नहीं है। परन्तु यहां रहने से, मेरे स्वजन यहां आयेंगे और मेरे निमित्त...मेरे इन गुरूदेव को परेशान करेंगे...। इसलिए यहां से जंगल के रास्ते चल देना चाहिए।'

सूर्य अस्त हो गया था। पृथ्वी पर अंधेरा उतर आया था। नूतन शिष्य ने आचार्य चंडरूद्र को कहा : 'गुरूदेव, अभी यहां से अपन चल दें तो अच्छा रहेगा, अन्यथा मेरे स्वजन आपको परेशान करेंगे।'

आचार्य ने कहा : 'अंधेरे में कैसे चलेंगे ? मेरी आंखें अंधेरे में मार्ग नहीं देख सकती...।'

शिष्य ने कहा : 'गुरूदेव, आपको उठाकर मैं चलूंगा। आप मेरे कंधे पर बैठ जाइए।'

आचार्य चंडरूद्र क्रुद्ध तो थे ही...बैठ गए नए शिष्य के कंधे पर। शिष्य गुरू को उठाकर चल दिया। अंधेरे में जंगल की पगडंडी पर चलना...और गुरू को उठाकर चलना सरल तो था नहीं। कहां खड्डा होता है, कहां टेकर होता है...कंधे पर बैठे आचार्य को धक्के लगते हैं...गिरने का भय भी लगता है। उनका क्रोध बढ़ता है। शिष्य को कठोर शब्द कहते हैं...शिष्य समताभाव रखता है ! चूंकि वह साधु बना था...आजीवन सामायिक व्रत स्वीकार लिया था। आचार्य उसके मुंडित सर के ऊपर लकड़ी मारते हैं... सर में से खून बहता है... चिल्लाते हैं आचार्य : 'सीधा नहीं चलता है ! मुझे जमीन पर गिराकर मार देगा... !'

नए शिष्य के मन में तनिक भी रोष नहीं आता है। 'मैं स्वयं चल कर शिष्य बना हूं...मैंने इनको परेशान किया हैं... वे तो शान्ति से बैठे अपना काम करते थे... दोष उनका नहीं, मेरा है। ये तो मेरे परम उपकारी हैं...' ये थे उनके समतामूलक विचार। यह था उनका भाव सामायिक ! हाँ, चलते-चलते... खड़े-खड़े... बैठे-बैठे भी भाव सामायिक हो सकता है।

शिष्य चलते चलते आत्मचिंतन में लीन बने। समतायोग में स्थिर बने...और वे वीतराग-सर्वज्ञ बन गए ! वीतराग-सर्वज्ञ को अंधेरे में भी दिखता है। उन्होंने गुरू को नहीं कहा कि : 'मुझे केवल ज्ञान हो गया है !' वे तो चलते रहे ! अब वे चलते-चलते लड़खड़ाते नहीं हैं...मार्ग दिखता

है... सीधा चलते हैं । तब आचार्य ने कहा : 'अब कैसा सीधा चलता है । डंडे की मार पड़ी कि ज्ञान हुआ...कह तो...कौन सा ज्ञान हुआ तुझे अब ?'

'गुरुदेव, अप्रतिपाती (केवलज्ञान) ज्ञान हुआ है ।'

'अप्रतिपाती ज्ञान ? कब हुआ ?' आचार्य छलांग लगाकर शिष्य के कंधे से नीचे कूद पड़े और शिष्य के चरणों में गिर पड़े । बहुत पश्चात्ताप करने लगे...पश्चात्ताप करते करते वे भी समतायोग में स्थिर हो गए । उनको भी केवलज्ञान की प्राप्ति होती है ।

सामायिक में अतिचारों से वचना है :

सामायिक की क्रिया करते करते भाव सामायिक में प्रवेश होगा, परंतु सामायिक की क्रिया में अतिचार नहीं लगने देने चाहिए । यानी सामायिक की क्रिया को दोष नहीं लगने देने चाहिए । ग्रंथकार आचार्यश्री ने पांच अतिचार बताये हैं–

''**योगदुष्प्रणिधानानादरस्मृत्यनुपस्थापनानि ।**''

१. पहला अतिचार है मन का दुष्प्रणिधान । मन के पाप विचार ।

२. दूसरा अतिचार है वचन का दुष्प्रणिधान । पाप-वचन ।

३. तीसरा अतिचार है काया का दुष्प्रणिधान । काया की पाप प्रवृत्ति।

४. चौथा अतिचार है प्रबल प्रमाद वगैरह के कारण सामायिक के प्रति अनादर ।

५. पांचवा अतिचार है स्मृतिभ्रंश ।

पहले तीन अतिचार नहीं लगे इसलिए जाग्रति आवश्यक है । यदि मन में पाप विचार आ जाय तो तुरन्त 'मिच्छामि दुक्कडं' दे देना चाहिए । पाप विचारों का प्रायश्चित्त है मिच्छामि दुक्कडं । इस से मन की शुद्धि हो जाती है । 'धर्मबिन्दु' के टीकाकार आचार्यश्री ने कहा है : **मिथ्यादुष्कृतेन मनोदुष्प्रणिधानमात्रशुद्धिश्य** । बड़ी महत्वपूर्ण है यह बात । मन की शुद्धि का सरल और सुंदर उपाय बता दिया है । परंतु 'मैंने यह पाप-विचार किया, नहीं करना चाहिए था...' इतना महसूस तो होना चाहिएं न ? विचारों के प्रति जाग्रति के बिना यह संभव नहीं है । 'मनःशुद्धि' का आग्रह होना जरूरी है ।

साधुजीवन में भी यही उपाय है :

साधुजीवन में साधु-साध्वी के लिए मनःशुद्धि का यही 'मिच्छामि दुक्कडं'

का प्रायश्चित बताया गया है । साधु-साध्वी को यावज्जीव का सामायिक होता है । जिंदगी है मनुष्य की । मन की चंचलता कभी कभी साधु-साध्वी को भी सताती है । जब कभी पाप विचार आ जाय, 'मिच्छामि दुक्कडं' के पानी से मन को धो देना चाहिए ।

एक बात बराबर समझ लेना कि अतिचार युक्त धर्मानुष्ठान निरर्थक नहीं है । कोई बुद्धिमान् कहते हैं : 'धर्म की क्रिया करना तो दोषरहित करना, दोष लगते हों तो धर्मक्रिया नहीं करना ।' यह गलत धारणा है । जानबूझकर तो कोई दोष लगाता नहीं है ! अनजानपन से या प्रमाद से दोष लगते हैं । परंतु निरंतर अभ्यास करने से एकदिन वह क्रिया अतिचाररहित करनेवाले बन जाओगे । अतिचार लगने के भय से यदि क्रिया को छोड़ दिया तो कभी निरतिचार क्रिया करने का अवसर नहीं आयेगा ।

प्रश्न : कुछ लोग १०/१५ साल से सामायिक करते हैं, फिर भी उनकी सामायिक की क्रिया दोषयुक्त ही होती है, अतिचार लगते रहते हैं । १०/१५ साल का अभ्यास क्या कम है ?

महाराजश्री : हाँ कम है ! ५/१० या १५ वर्ष का अभ्यास नहीं, १५/२० जन्मों का अभ्यास होने पर निरतिचार धर्मक्रिया होगी ! इसलिए टीकाकार आचार्यश्री ने स्पष्ट शब्दों में कहा है :

'अभ्यासोऽपि प्रायः प्रभूत जन्मानुगो भवति शुद्धः ।'

'प्रायः' शब्द का प्रयोग इसलिए किया गया है कि कोई उद्बुद्ध और अल्प कर्मवाला मनुष्य एक जन्म में ही धर्मक्रिया दोषरहित बना सकता है। एक-दो वर्ष में ही निरतिचार धर्मक्रिया करनेवाला बन सकता है ! परंतु ऐसे मनुष्य होते हैं लाख में एक या दो !

क्रमशः

राजा सम्प्रति

"जिस प्रकार उस तिष्यरक्षिताने हमारा मनोरथ निष्फल करदिए; उसी प्रकार इस बालक के पुण्य प्रताप से उसके मनोरथ भी आप निष्फल कर दिखाइये !" चन्दा बीचमें ही बोल पड़ी ।

एक ओर बालक का असाधारण पुण्यबल था और दूसरी ओर घरमें से इस प्रकार सतत प्रेरणा हो रही थी; अतएव कुणाल के हृदय में सुप्त आशा फिर जागृत हो चली । वह कहने लगा :- "माता ! मुझे तनिक विचार करलेने दे । उसके बाद ही मैं ठीक निर्णय कर सकूँगा ।" इतना कहकर कुणाल वहाँ से चला गया ।

उस दिन सायंकाल अपने कमरे में बैठा हुआ कुणाल विचार कर रहा था । उसने अपनी बाल्यावस्था से अब-तक के जीवन-इतिहासपर दृष्टि दौड़ायी। वह उज्ञयनी का आनन्द और अवन्ती के युवराज-पदका वैभव, उसकी अन्तर की आँखों के सामने फिर एकबार अपनी झलक दिखा रहा था। उस क्रूर माता ने उसे आठ वर्ष की अवस्थामें ही अन्धा बनाकर संसार से बहिष्कृत्-सा कर दिया था । "हाय ! मैंने उसका ऐसा कौन-सा अपराध किया था कि जिसके बदले उसने ऐसे अपने अधम कृत्य सें मेरा सर्वनाश कर दिया ! उसके पुत्र से पहले यदि मेरा जन्म हुआ, तो इसमें मेरा क्या दोष था ? जिससे कि उसने राजाको निमित्त बनाकर मेरी आँखें फुड़वादीं ! आज कई वर्ष बीत जानेपर भी मेरी अवन्ती का वह वैभव उसका पुत्र महेन्द्र, युवराज-पद पाकर भोग रहा है ! तब जिस प्रकार उसने मेरा मनोरथ व्यर्थ कर दिया, उसी प्रकार मैं भी क्यों न उसके मनोरथको नष्ट-भ्रष्ट कर दूँ ? और अपना राज्य पिता को प्रसन्नकर क्यों न प्राप्त करूँ ? यदि आज समय बदला है तो क्यों न मैं भी परिश्रम करके पुत्र के भाग्य की परीक्षा करके देखलूँ ? संसार में किसी के भी दिन हमेशा एक-से नहीं जाते ! संसार में देखने में आता है कि पिता का खोया हुआ राज्य पुत्र फिर प्राप्त कर लेता है। ऐसी दशा में मुझे भी अवश्य प्रयत्न करना चाहिए । कदाचित् उसका जागृत भाग्यही मुझे प्रेरणा करता हो तो, किसे पता ! बस, यही निश्चय

रहा कि जैसे भी हो सके मैं एकबार पाटलीपुत्र पहुँच जाऊँ और वहाँ अपनी सङ्गीत विद्याके चमत्कार द्वारा पिता को प्रसन्न करके वरदान प्राप्त करलूँ !" इस प्रकार विचार-ही-विचार में अन्तिम निर्णयपर पहुँच कर कुणाल ने सुनन्दा को वह सब कह सुनाया। उसकी बात सुनते ही सुनन्दा प्रसन्न हुई और उसने आर्शीर्वाद दिया—"बेटा ! तेरा मनोरथ शीघ्र सफल हो ! और शत्रुका सारा प्रपंञ्च नष्ट हो जाय !"

"मेरी भी यही कामना है कुमार ! आपके प्रयत्न में पूर्णरूप से सफलता प्राप्त हो।" चन्दाने नम्रभाव से कहा।

"पुत्र ! यहाँ से पाटलीपुत्र बहुत दूर है। इसलिए मार्ग में तुझे कठिनाई न होने की दृष्टि से साथ में तू किसे ले-जाना चाहता है ?" सुनन्दा ने पूछा।

"किसी को नहीं, माताजी ! मैं अकेला ही जाना चाहता हूँ और वह भी गुप्त रूपसे ! पिता मुझे पहचान सकें, इस प्रकार भी नहीं। हाँ, बाद में अनुकूल समय आनेपर भले ही वे पहचान लें; किन्तु यहाँ से तो गुप्तवेष में ही एक अन्धे गवैयेके रूप में निकलकर घूमता-फिरता मैं अकेला ही पाटलीपुत्र जाऊँगा।"

"किन्तु पुत्र ! मार्ग में अकेला और नेत्रहीन अपङ्ग-होने से खाने-पीने का तुझे कष्ट होगा। इसलिए साथ में एक व्यक्तिको रखने से सुविधा रहेगी।" सुनन्दा ने समझाया !

"इसके लिए तो मेरी सङ्गीतविद्या ही सहायक सिद्ध हो सकेगी। यदि यह सङ्गीतविद्या मुझे खाने जितना भी न दिला सकी; तो महाराज से वह महान् साम्राज्य कैसे दिला सकेगी ? अतः मेरा साथी तो केवल यह सितार ही रहेगा।" कुणाल ने कहा।

वह समय ही ऐसा था कि भाग्यपर भरोसा रखे बिना छुटकारा नहीं था। अतएव विधातापर विश्वास रखकर कुणाल की बातका सबने अनुमोदन किया। इसके बाद एक शुभ मुहूर्त साधकर कुणाल जब चलने को तैयार हुआ, तो शरतकुमारी ने मङ्गल-तिलक किया और वह सामान्य भिक्षुक गवैयेका वेष धारण कर हाथ में सितार लिए पाटलीपुत्र के मार्गपर चल पड़ा। मार्ग में उसे बहुत ही अच्छे शकुन हुए। उन शकुनों से प्रसन्नता अनुभव करता हुआ कुणाल अपने स्नेही जनों की दृष्टि से ओझल हो गया।

अन्धा-सितारवाला

पाटलीपुत्र के राज-मार्गपर अभी कुछ दिनों से एक सितारवाला गाता हुआ दिखाई देता है । जब वह सितार के स्वर साधता हुआ अपने मधुर कण्ठ मे संगीत के स्वर अलापता है; तो उसकी इस कलाके सामने किन्नर और गंधर्व भी लज्जित हो जाते हैं । उस अंधे गायकको मधुर तान से सारा पाटलीपुत्र पागल-सा हो रहा है । जब वह गाने लगता है तो हजारों मनुष्य उसकी स्वर माधुरी मे लुब्ध होकर गाना सुनने खड़े रह जाते हैं । सैकड़ों मनुष्य अपना काम छोड़कर उस देव दुर्लभ संगीत की ओर आकर्षित होते हैं । कितने ही धनी-मानी एवं सरदार लोग उसकी प्रशंसा सुनकर अपने यहाँ उसे बुलाते और संगीत सुनते हैं । उसके संगीतपर मुग्ध होनेवाले लोगों के हृदय में तो केवल वह मधुर ध्वनि ही गूंजती रहती है । कई बार बड़े-बड़े अमीर-उमरावों की ओरसे उसे आमन्त्रण मिलता, और वह उसे स्वीकार करके उनके यहाँ जाता और अपने संगीत के अद्भुत चमत्कार से श्रोताओंको मुग्ध कर लेता था ।

प्रसन्न हुए सरदार जब उससे नाम-धाम पूछते तो वह केवल इतना ही बतलाता कि मैं सूरदास हूँ । अन्ध सितारवाला हूँ ।

''तुम्हारे परिवार में कौन है सूरदासजी ? तो उत्तर में वह यही कहता कि ''यह सितार ही मेरा सब कुछ है । यही मुझ अन्धे की लकड़ी है । यही मेरे जीवन का आधार है ।''

बड़े-बड़े प्रलोभन दिखाकर संगीत के अनन्य प्रेमी धनवान उसे सदैव के लिए ही अपने यहाँ रहने का आग्रह करते, किन्तु वह किसी के भी यहाँ सदैव के लिए रहना स्वीकार नहीं करता । वह यही उत्तर देता कि :- ''किसी के घर रहने से फिर उसीका चित्त प्रसन्न रखने की उत्कण्ठा रहती है । अतः प्रभु-भक्तिमें जो भावना रहनी चाहिए, वह नहीं रह पाती । इसीलिए हम तो केवल प्रभु के ही सेवक कहलाते हुए उनकी प्रसन्नता सम्पादन करके ही उन महान् आत्मा की नौकरी बजाते हैं ।''

इसप्रकार सितारवाला उनलोगों को यथोचित उत्तर देकर अपना असल परिचय किसी को भी नहीं बतलाता था । जब उसके पूर्व-जीवन के विषय में पूछा जाता तो वह यही उत्तर देता कि :- ''मेरा जीवन बहुत ही रहस्यपूर्ण है । मैं उसे किसी के भी सामने प्रकट करना नहीं चाहता । अतएव आपलोग

भी कृपाकर मुझ से उस विषय में कोई प्रश्न न करें।'' उसके इस उत्तर को सुनकर उसे अप्रसन्न करने के लिए कोई भी उससे फिर पूर्व-जीवन के विषय में पूछ-ताछ नहीं करता था। जहाँ-तहाँ से उसे भोजन के लिए निमन्त्रण मिलते और उन्हें स्वीकार कर वह वहाँ जाता एवं अपने संगीत से उन्हें प्रसन्न कर देता था। अमीरलोग उसके सामने कुछ भेंट या उपहार भी रखते, किन्तु वह उस मायाको स्वीकार नहीं करता ! और त्यागकी महत्ताका सबको भान कराते हुए केवल भोजन से ही सन्तोष कर लेता था। इसप्रकार विशाल पाटलीपुत्र नगर में साधारण रङ्क से लेकर धनवान तक प्रत्येक के घर उस अन्धे सितारवाले के गीतों की प्रशंसा होने लगी।

एकदिन सम्राट् अशोक दरबार में बैठे हुए थे और सभी राज-सभासद अपने-अपने आसनपर बैठे हुए थे। उस समय राज-काज से निवृत्त होने के पश्चात् कुछ नए-पुराने विवरण पढ़कर सुनाए जा रहे थे। इतने ही में एक मन्त्रीने निवेदन किया कि, – ''महाराज ! अभी कुछ दिनों से नगर में एक गवैया आया है। अहा, उसकी संगीत कलाकी क्या प्रशंसा की जाय ? देव ! उसने सारे नगर को पागल-सा बना दिया है।''

''सच बात है महाराज ! मुझे तो यही जान पड़ता है कि वह कोई गन्धर्व गुप्तवेश में यहाँ आया है ? अथवा यह भी हो सकता है कि उसे अपने इष्टदेव से ही कोई वरदान प्राप्त हो ! अन्यथा इतना सुन्दर कोई गा नहीं सकता। उसके संगीत का स्वर एकबार कानों में प्रविष्ट होते ही चित्त में ऐसी बेचैनी पैदा हो जाती है कि बस, दिन रात उसका संगीत ही सुनते रहें।'' दूसरे मन्त्रीने उसका समर्थन किया।

''फिर भी बड़े ही दुःख की बात यह है कि ऐसे सुन्दर कलावंत को दुष्ट विधाता ने अंधा बना दिया है।''

यह सुनकर महाराज ने पूछा :- ''वह अपने नगर का ही है अथवा कहीं बाहर से आया है ?

''है, तो कोई परदेसी ! गरीब-बेचारा, किन्तु उसकी संगीत-कला अद्भुत् है। उसके मधुर स्वर के सम्मुख गंधर्व भी हार जायँगे।'' प्रधान मन्त्री ने कहा।

क्रमशः

भोगीलाल लहेरचन्द इन्स्टीटयूट ऑफ इन्डॉलॉजी

प्राकृत भाषा एवं साहित्य

१० वीं ग्रीष्मकालीन अध्ययनशाला का उद्‌घाटन

दि. २४ मई, १९९८

भाषा के स्वाभाविक विकास का नाम है प्राकृत- खुराना

नई दिल्ली २५ मई (जनसत्ता) प्राकृत भाषा एवं साहित्य पर दसवें अखिल भारतीय ग्रीष्मकालीन स्कूल का उद्‌घाटन रविवार को विजयबल्लभ स्मारक, जी.टी. करनाल रोड में केंद्रीय पर्यटन एवं संसदीय मामलों के मंत्री मदनलाल खुराना ने किंया। उदघाटन भाषण करते हुए उन्हेंने कहा कि प्राकृत, भाषा के स्वाभाविक विकास का नाम है। भगवान् महावीर, सम्राट अशोक जैसे महापुरूषों ने इसी जनबोली के माध्यम से अपना संदेश आम जनता तक पहुँचाया। यह भाषा न केवल सर्वधर्म के समभाव पर चलने की प्रेरणा देती है, बल्कि धर्म, दर्शन, सभ्यता, संस्कृति तथा साहित्यिक विकास के अन्य मूल तत्वों को भी धारण करती है। उन्होंने कहा कि प्राकृत के ज्ञान के बिना कोई कैसे समझ सकता है कि वेदों में बहुरूपता क्यों आई। इस ग्रीष्मकालीन स्कूल का आयोजन भोगीलाल लहेरचंद इंस्टीटूयट ऑफ इंडोलोजी ने किया था।

कलकत्ता विश्वविद्यालय में भाषा विज्ञान विभाग के अध्यक्ष प्रो सत्यरंजन बैनर्जी ने प्राकृत भाषा एवं साहित्य के ऐतिहासिक एवं भाषा वैज्ञानिक महत्व पर प्रकाश डाला। समारोह में उपस्थित विद्वानों में इस संस्थान के निर्देशक, विमल प्रकाश जैन, प्रौ. प्रेमसिंह, भाषा वि. विभाग, दि. वि. वि., श्री नरेन्द्र प्रकाश जैन, श्री राजकुमार जैन, श्री विनोद भाई दलाल, एयर-मार्शल पी. के. जैन, श्री के. के. जैन, श्री विशम्भरनाथ जैन, प्रोफे. संघसेन सिंह आदि प्रमुख थे।

इस अध्ययनशाला का उद्‌घाटन इस संस्थान में २४ मई १९९८ को

हुआ था। समापन समारोह १४ जून १९९८ को हुआ। पारम्परिक महामंत्र णमोकार एवं शाला के अध्येताओं द्वारा प्राकृत में रचित "सरस्वती वदंना" से उत्सव का शुभारंभ हुआ। समग्र भारत के विश्वविद्यालयों/महाविद्यालयों से ४० वरिष्ठ अध्यापकों एवं शोध छात्र-छात्राओं ने पूर्णकालिक अध्येता के रूप में इसमें भाग लिया।

कलकत्ते से सभागत प्रो. सत्यरंजन बैनर्जी ने इस शाला के लगातार विगत दस वर्षो के वार्षिक सत्रों की प्रगति का संक्षिप्त परिचय दिया। इस उत्सव की प्रमुख अतिथि इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की शैक्षणिक निर्देशक मान्य विदुषी डॉ. कपिला वात्स्यायन थी। दूसरे सम्माननीय अतिथि थे राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष एवं भारत के भूतपूर्व माननीय मुख्य न्यायाधिपति श्री एम. एन. वैंकटचलैया। श्री पारसमल जी भंसाली, अध्यक्ष श्री नाकोडा पार्श्वनाथ जैन पेढ़ी ने समारोह की अध्यक्षता की। इस संस्थान के अध्यक्ष श्री प्रताप भोगीलाल जी, उपाध्यक्ष श्री नरेन्द्र प्रकाश जैन, श्री आत्मबल्लभ जैन शिक्षण निधि के मानद संचिव श्री राजकुमार समारह जैन, आदि महानुभावों ने समारोह की कार्यवाही के संचालन तथा संस्थान और उससे जुड़ी हुई अन्य संस्थाओं का संक्षिप्त/मार्मिक परिचय दिया।

अध्ययनशाला के तीन सर्वोच्च अध्येताओं को प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार तथा सभी ४० अध्येताओं को प्रमाणपत्रों का वितरण किया गया।

इस अवसर पर प्राकृत एवं संस्कृत के सुख्यात् विद्वान डॉ. वामन महादेव कुलकर्णी को माननीय डॉ. कपिला वात्स्यायन के द्वारा ५१,०००/- रूपये का वर्ष १९९७ का आचार्य हेमचन्द्र सूरि पुरस्कार प्रदान किया गया। इस पुरस्कार की स्थापना नानकचन्द जसवन्ता धर्मार्थ ट्रस्ट के संस्थापक एवं अध्यक्ष श्री देवेन जसवन्ता द्वारा की गई है। डॉ. कुलकर्णी ने अपने संक्षिप्त वक्तव्य में विगत ६० वर्षों से अधिक की अपनी अथक साहित्य साधना के प्रतीक के रूप में कृतज्ञतापूर्वक यह पुरस्कार स्वीकार किया।

माननीय वैंकटचलैया जी ने अपने सम्बोधन में पश्चिमी एवं भारतीय जगत के प्रख्यात विचारकों का उल्लेख करते हुए यह संदेश दिया कि झाड़ु देने जैसा मामुली से मामुली कार्य भी पूरी हार्दिकता और निपुणता के साथ किया जाना चाहिए। आगे उन्होंने कहा कि इन्डॉलॉजी उस भारतीय

संस्कृति का प्रतिनिधित्व करती है जो न केवल विश्व-रचना, चेतन मन, और अचेतन द्रव्य, वृत्तक्रम से चलन वाले कालचक्र तथा परम सत्य को प्रकाशित करती है, बल्कि उन सबमें एक अविनाभावी सम्बन्ध भी स्थापित करती है। इस महान् देश की सांस्कृतिक धरोहर को समझने के लिए इन्डॉलॉजी ही एकमात्र मार्ग है। मूल्यों के ह्रास के इस युग में वे वस्तुगत मूल्य बहुत महत्वपूर्ण हैं, जो हमारे प्राचीन महापुरूषों के द्वारा स्थापित किए गए हैं। चेतनमन और वैश्विक-सत्ता की अन्य अवधारणाएं यद्यपि आधुनिक हैं, परन्तु मानव सभ्यता के इतिहास में भारतीय परम्परा में कई हजार वर्ष पूर्व इन सब विषयों पर चिया गया गम्भीर चिन्तन भारत के अनेक पवित्र धार्मिक/दार्शनिक ग्रन्थों में प्रमुख परिमाण में विद्यमान है।

डॉ. कपिला वात्स्यायन ने उपस्थित समूह को सम्बोधित करते हुए कहा कि उत्तर से दक्षिण एवं पूर्व से पश्चिम तक भारत की सभी भाषाएँ चाहे वह वैदिक हो या संस्कृत, पालि हो या प्राकृत, तमिल हो या तेलुगू, मलयालम हो या मराठी या और कोई, सब की सब एक दूसरे से आत्यान्तिक रूप से जुड़ी हुई हैं। पालि प्राकृत का भारतीय संस्कृति, भाषा, साहित्य और बोलियों के विकास में अभूतपूर्व योगदान है। अपनी प्राचीन भाषाओं के विकास को समझे बिना हम गणित, भौतिकी एवं दर्शन जैसे विषयों को भी समझ नहीं सकते। सभा में उपस्थित अनेक माननीय जैन महानुभावों को सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा कि इस देश के जैन भण्डारों में जो करोड़ों पाण्डुलिपियाँ सुरक्षित हैं, उनकी माइक्रोफिल्मस सभी भारतीय विद्वानों को उपलब्ध होनी चाहिए, जिससे प्राचीन भारतीय ज्ञान-विज्ञान के नवीनतम द्वारों का उद्घाटन हो सके।

संस्थान के निर्देशक डॉ. विमल प्रकाश जैन ने सम्पूर्ण कार्यक्रम का संचालन किया। संस्थान के उपाध्यक्ष श्री नरेन्द्र प्रकाश जैन ने सर्व उपस्थित महानुभावों के प्रति हार्दिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन सभा समारोह

सेवा, शिक्षा और साधना की भावना को साकार कर रही श्री जैन श्वेताम्बर स्थानकवासी महासभा के सात दशक पूरे होने पर कलकत्ता के साइंस सिटी आडिटोरियम में भव्यपूर्ण समारोह सम्पन्न हुआ। समारोह की अध्यक्षता कलकत्ता विश्वविद्यालय के पूर्व उपकुलपति श्री संतोष कुमार भट्टाचार्य नें की। उन्होंने शिक्षा के विकास के लिए उद्योगपतियों तथा गैर सरकारी संस्थानो को आगे आने का आह्वान किया। मान्य अतिथि राज्य के दमकल मन्त्री प्रतिम चटर्जी ने इस संस्था द्वारा पश्चिम बंगाल में राष्ट्रीय एकता व सद्भाव के लिए किये गए कार्यो की सराहना की।

जाने माने कवि व प्रज्ञा पुरूष श्री कन्हैया लाल जी सेठिया ने बंगाल और राजस्थान की संस्कृति का समन्वयीकरण करते हुए कहा कि जहाँ मीरा के भजन बंगाल में गाये जाते हैं वहीं विवेकानन्द का साधना स्थल राजस्थान रहा है।

ऐशियन ऐज व प्रतिदिन के निर्देशक श्री नारायन वसु ने संस्था के कार्यो और योगदान की प्रशंसा करते हुए कहा कि यह दुर्भाग्य की बात है कि आजादी के ५० साल बाद भी देश मे शिक्षा का पूर्ण विकास नहीं हो पाया है।

प्रौ. कल्याणमलजी लोढा ने कहा कि इस संस्था ने सेवा सधना और शिक्षा के साथ-२ संकल्प, समपर्ण, श्रद्धा एवं त्याग के भी सात दशक पूर्ण कर व्यक्ति और समाज के संकल्प का अद्भुत आदर्श प्रस्तुत किया है। डा. लक्ष्मी मल सिंघवी ने अपने सारगर्भित वक्तव्य में कहा कि इस संस्था के माध्यम के त्रिरन्त सम्यक् ज्ञान, सम्यक दर्शन और सम्यक चरित्र का विकास हुआ है तथा यह अप्रतिम प्रयास गौरव का विषय है और आने वाली पीढ़ी के लिए धरोहर है आपने कहा कि करूणा से जो गंगा निकलती है, सेवा है। मनुष्य सेवा की भावना से ही जुड़ता है और इसी का उदाहरण रूप ये संस्था है। शद्व तभी सार्थक होते हैं जब उसे आकार मिलता है।

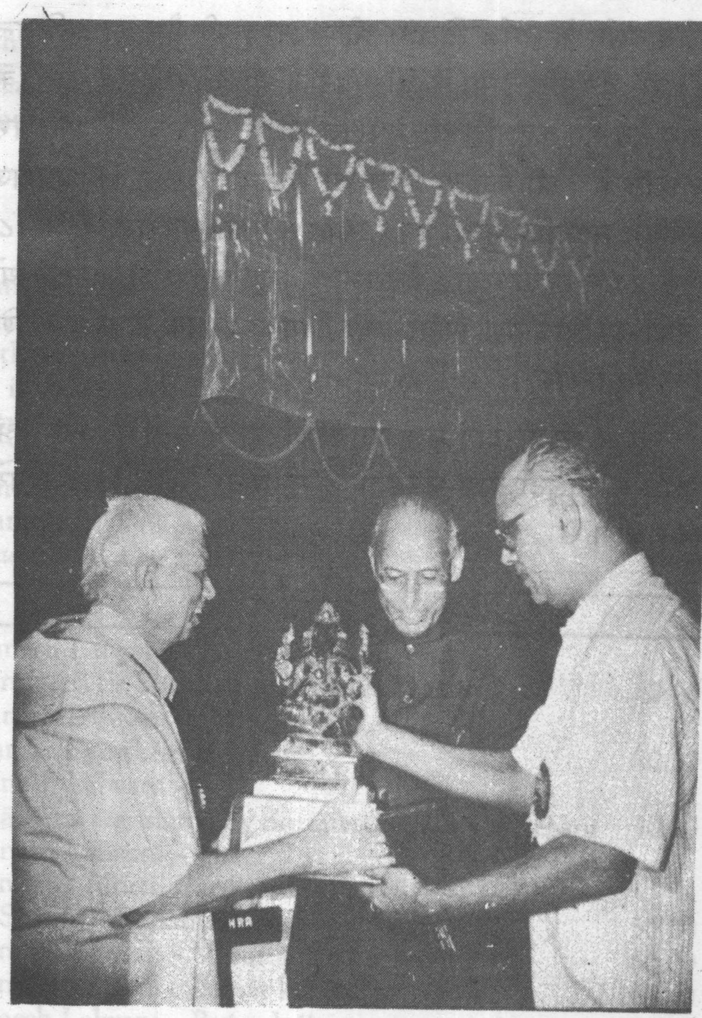

श्री भूपराज जी का अभिनन्दन करते हुए उन्हे स्मृति चिन्ह प्रदान कर रहे हैं डा. लक्ष्मीभल सिंघवी । साथ में खड़े हैं श्री रिद्धकरण जी बोथरा ।

श्री रिखबदास भंसाली, श्री प्रदीप कुंडलिया, श्री विनोद कांकरिया एवं श्री रिखवदास जैन ने भी अपने-अपने विचार रखे तथा सभा के कार्यों व उपलब्धियों से सभी को अवगत कराया। इस अवसर पर कर्मठ कार्यकर्त्ता एवं जैन दर्शन के मर्मज्ञ विद्वान श्री भूपराज जी जैन का अभिनन्दन किया गया। डा. वसुमति डागा ने श्री भूपराज जी के जीवन व कार्यों का संक्षिप्त परिचय देते हुऐ कहा कि श्री भूपराज जी का अभिनन्दन ऋषि परम्परा का अभिनन्दन है। श्री कन्हैया लाल जी सेठिया ने कहा कि भूपराज जी का अभिनन्दन मानवीय मूल्यों का सम्मान है। श्री भूपराज जी को ८१ हजार का चैक प्रदान किया गया। जैनसभा के सात दशक की उपलब्धियों पर एक स्मारिका का लोकापर्ण किया गया जिसका शीर्षक है साधना शिक्षा और सेवा के सातदशक।

अन्त मे श्री सरदार मल जी कांकरिया ने धन्यवाद दिया और संस्था की ओर से मालदा बाढ़ पीड़ितों के सहायतार्थ ७०,००० रूपये देने की घोषणा की।

JAIN BHAWAN PUBLICATIONS

P-25 Kalakar Street, Calcutta - 700 007

English

1. *Bhagavati-sütra* – Test edited with English translation by K.C. Lalwani in 4 volumes;

Vol-I (śatakas 1-2)	Price : Rs.	150.00
Vol-II (śatakas 3-6)		150.00
Vol-III (śatakas 7-8)		150.00
Vol-IV (śatakas 9-11)		150.00

2. James Burges – *The Temples of Śatruñjaya*, Jain Bhawan, Calcutta, 1977, pp. x+82 with 45 plates — Price : Rs. 100.00
   [It is the glorification of the sacred mountain *Śatruñjaya*.]
3. P.C. Samsukha – *Essence of Jainism* translated by Ganesh Lalwani. — Price : Rs. 10.00
4. Ganesh Lawani – *Thus Sayeth Our Lord* — 10.00

Hindi

5. Ganesh Lalwani – Atimukta (2nd edn.) translated by Shrimati Rajkumari Begani — 40.00
6. Ganesh Lalwani – Śraman Samskriti ki Kavitä — 20.00
7. Ganesh Lalwani – Nílänjanä translated by Shrimati Rajkumari Begani — 30.00
8. Ganesh Lalwani – Candana-Mürti, translated by Shrimati Rajkumari Begani — 50.00
9. Ganesh Lalwani – Vardhamän Mahavír — 60.00
10. Ganesh Lalwani – Barsät kí Ek Rät — 45.00
11. Ganesh Lalwani – Pañcadaśí — 100.00
12. Rajkumari Begani – Yädó ke Äine më — 30.00

Bengali

13. Ganesh Lalwani – Atimukta — 40.00
14. Ganesh Lalwani – Śraman Samskrti Kavitä — 20.00
15. Puran Chand Shyamsukha – Bhagavän Mahävír O Jaina Dharma — 15.00

तित्थयर

जिन धर्म और संस्कृति की महक से सुरभित करने वाली पत्रिका तित्थयर (मासिक) के आजीवन सदस्य बनें ।

आजीवन सदस्यता शुल्क- एक हजार रूपये

JAIN JOURNAL

One of its Kind, most Valuable, Quaterly research Journal on Jainism

Life Membership – Rs. 2000/-
Yearly – Rs. 60/-

श्रमण

बंगाल की भूमि में जैन संस्कृति के गौरव का प्रतीक श्रमण (बंगला) के आजीवन सदस्य बनिये ।

आजीवन सदस्यता शुल्क- पाँच सौ रूपये

वार्षिक शुल्क- तीस रूपये

जैन मत तब से प्रचलित है
जबसे संसार में सृष्टि का आरम्भ हुआ ।
मुझे इसमें किसी प्रकार की आपत्ति नहीं है
कि जैन धर्म वैदान्तिक दर्शनों से पूर्व का है ।

Dr. Satish Chandra
Principal Sanskrit College
Calcutta

Estd. Quality Since 1940

BHANSALI

Quality. Innovation. Reliability

BHANSALI UDYOG Pvt. Ltd.

(Formerly : Laxman Singh Jariwala)

Balwant Jain- *Chairman*

A-42, Mayapuri, Phase-1, New Delhi - 110064
Phone : 5144496, 5131086, 5132203
Fax : 91-011-5131184
E-mail : laxman.jariwala@gems.vsni.net.in

जैन धर्म सर्वथा स्वतन्त्र घर्म है
यह किसी का अनुकरण नहीं है ।

Dr. Jacobi

卐

R. C. BOTHRA & COMPANY PVT. LTD

Steams Agents, Handling Agents,
Commission Agents & Transport Contractors

Regd. Office

2, Clive Ghat Street,, (N. C. Dutta Sarani)
6th Floor, Room No. 6, Phone : 220-6702, 220-6400
Fax : (91) (33) 220-9333, Telex : 21-7611 RAVI IN

Vizag Office

28-2-47 Daspalla Centre
Vishakhapatnam - 530020, Phone : 69208/63276
Fax : 91-0891-569326, Gram : BOTHRA

N. K. JEWELLERS
Gold Jewellery & Silver Ware Dealers
2, Kali Krishna Tagore Street, Calcutta - 700 007

IN THE MEMORY OF LATE
Jitendra Singh Nahar, Rabindra Singh Nahar
40/4A, Chakraberia South, Calcutta - 700 020
Phone : (O) 244-1309, (R) 475-7458

SUDERA ENTERPRISES PVT. LTD.
1, Shakespeare Sarani, Calcutta - 700 071
Phone : 282-7615/7617/2726
Gram : Sudera

VEEKEY ELECTRONICS
36, Dhandevi Khanna Road
Calcutta - 700 054
Phone : 352-8940/334-4140 (R) 352-8387/9885

SPACE 'N' WINGS
Travel Agents
10, Dr. Rajendra Prasad Sarani (Clive Row)
1st Floor, Calcutta - 700 001
Phone : 242-7806/8835/5852
P.S.A. Biman Bangladesh Airlines

GAUTAM TRADING CORPORATION
32, Ezra Street, Calcutta - 700 001
6th Floor, Room No - 654
Phone : (O) 250623, (R) 239-6823

SANA FASHIONS
A20/21 Laghu Udyog
I.B. Patel Road, Goregaon East, Bombay - 400 063

H. R. ELECTRICALS
Dealers in Electrical Switch gear, starter & spare parts
Siemens, English Electric L.T/ L.K. B.C.H., etc.
32, Ezra Street, 7th Floor, Room No - 712A
South Block, Calcutta - 700 001
Room No - 314, 3rd Floor
Phone : (O) 255009/1299, (R) 660-4332

VIJAY AJAY
9, India Exchange Place
Room No - 4/2, 4th Floor, Calcutta - 700 001
Phone : (O) 220-6974/8591/7126, 243-4318
Fax : 220 6974

MAHASINGH RAJ MEGH RAJ BAHADUR
Goal Para, Assam

KASTURCHAND VIJAYCHAND
155, Radha Bazar Street, Calcutta - 700 001
Phone : 220-7713

SURAJ MAL TATER
C/o Surajmal Chandmal
137, Bipin Behari Ganguli Street
Calcutta - 700 012
Phone : Shop - 227-1857 (R) 238-0026

TARUN TEXTILES (P) LTD.
203/1, Mahatma Gandhi Road, Calcutta - 700 007
Phone : 238-8677/1647, 239-6097

VISHESH AUTOMATIONS PVT. LTD.
Dealers of IBM, HCL-H.P. Seimens & Toshiba
16D, Ashutosh Mukherjee Road
Calcutta - 700 020, Phone : 476-2994, 455-0137
Fax : 91-33-4552151

ELECTRO PLASTIC PRODUCTS (P) LTD.
22, Rabindra Sarani, Calcutta - 700 073
Phone : 26-3028, 27-4039

MUSICAL FILMS (P) LTD.
9A, Explanade East, Calcutta - 700 069

S. VIJAY CHAND
Vinay Textiles
Whole Sale Merchants
113B Manohar Das Katra, Calcutta - 700 007
Phone : Shop - 238-1388, (R) 247-6105/2750
'Guddi' 10, Jamunalal Bajaj Street
2nd Floor, Calcutta - 700 007

जो हिंसात्मक प्रवृति से विलग है,
वही बुद्ध, ज्ञानी हैं
WITH BEST WISHES

PANKAJ NAHATA
Oswal Manufacturers Pvt. Ltd.
Manufacturers & Suppliers of Garments & Hosiery Labels
4, Jagmohan Mallick Lane, Calcutta - 700 007
Phone : (O) 238-4755, (R) 238-0817

KUMAR PAL BAHADUR SINGH DUGAR
2F, Garcha First Lane, Calcutta - 700 019
Phone : (O) 278841/7539, (R) 475-9712/2807

D. K. SYNTHETICS
Whole Sale Dealer
180, Mahatma Gandhi Road
Mullick Kothi, 1st Floor, Calcutta - 700 007
Phone : Shop - 232-6040, (R) 684181

JAYSHREE EXPORTS
A Govt. of India Recognised Export House
105/4 Karaya Road, Calcutta - 700 017
Phone : 247-1810/1751, 240-6447
Fax : 91-33247-2897

MAHAVIR COKE INDUSTRIES (P) LTD.
1/1A Biplabi Anukul Chandra Street
Calcutta - 700 072, Ph : 215-1297, 26-4230/4240

APRAJITA
Air Conditioned Market
Calcutta - 700 071, Ph : 282-4649, Resi : 247-2670

AAREN EXPORTERS
12A, Netaji Subhas Road, 1st Floor, Room No. 10
Calcutta - 700 001, Phone : 220-1370/3855

विशुद्ध केशर तथा मैसूर की सुगन्धित चन्दन की लकड़ी,
वरक एवं धूप के लिये पधारें
SHRI JAIN SWETAMBER SEVA SAMITI
13, Narayan Prasad Babu Lane
Calcutta - 700 007, Phone : 239-1408

S. P. SYNTHETICS
House of Exclusive Shirtings
38, Armenian Street, 1st Floor, Calcutta - 700 001
Phone : 25-7312, Shop : 230-1180, Resi : 241-6831

SIDDHA NIKETAN
Goldel Chance to book flat in Jaipur
8, Ho Chi Minh Sarani
Calcutta - 700 071, Ph : 282-2164/4577

M/S. METROPOLITION BOOK COMPANY
93, Park Street, Calcutta - 700 016
Ph: 226-2418, Resi : 464-2783

ARBEITS INDIA
8/1, Middleton Road, 8th Floor, Room No. 4
Calcutta - 700 071, Ph: 296256/8730/1029
Resi : 2476526/6638/2405126
Telex : 021 2333, ARBI IN, Fax : 226-0174

G. M. SINGHVI
M/S. WILLARD INDIA LIMITED
Mcleod House
13, Netaji Subhas Road, Calcutta - 700 001
Phone : (O) 248-7476-8, (R) 475-4851/1483
Fax : 248-8184

CREATIVE LIMITED
12, Dargah Road, Post Box : 16127, Cal - 17
Ph: (033) 240-3758/1690/3450/0514
Fax : (033) 240 0098, 247 1833

JAYANTI LAL & CO.
20, Armenian Street, Calcutta - 700 001
Ph: 25-7927/3816/6734, Resi : 240-0440

P. C. JAIN
B-14, Sarvodaya Nagar, Kanpur - 208005
Ph: 29-5552/29-5955

UJJWAL TRADING PVT. LTD.
Regd Office :11, Clive Row, 3rd Floor, Room no. 14,
Cal -700 001, Ph: (O) 242-4131/4756

HARAK CHAND NAHATA
21, Anand Lok, New Delhi - 110049
Ph : 646-1075

S.C. SUKHANI
Santiniketan Building, 4th Floor, Room No. 14
8, Camac Street, Calcutta - 700 017
Phone : (O) 242-0525 (R) 239-9548
Fax : 242-3818

MAUJIRAM PANNALAL
Citizen Umbrellas
45, Armenian Street, Calcutta - 700 007
Ph : Shop- 242-4483/9181, (O) 238-1396/1871
Fax : 231-2151/666-6013

A.C. LOCKS CO.
22 Bonfield Lane, Calcutta - 700 007

CHUNNILAL ASHOK KUMAR
30, Cotton Street, 3rd Floor
Calcutta - 700 007, Phone : 238-7764
Resi : 666-4541, 530-9286

ARIHANT JEWELLERS
Mahendra Singh Nahata
57, Burtalla Street, Calcutta - 700 007
Phone : 238-7015, 232-4087/4978

C. H. SPINNING & WEAVING MILLS PVT. LTD.
Bothra ka Chowk, Gangasahar, Bikaner

JAICHAND VINODKUMAR
Exclusive Wholesaler of Fancy Sarees
1/1, Noormal Lohia Lane, 2nd Floor, Calcutta - 700 007
Phone : 238-3328/9678, 239-3450
Resi : 247-6785/7086, 40-0325/3995
Fax : 239-3450, 247-7526
Telex : 217761 JVS-IN Gram MINNI-BROS

KUSUM CHANACHUR
Prop. Churoria Brothers
Mfg. by : K. C. C. Food Product
P.O. Ajimganj, Dist. : Murshidabad
Phone: STD (03483)-53234
Calcutta- 230-0432, 231-2802

SURANA MOTORS PVT. LTD.
24A, Shakespeare Sarani
84 Parijat, 8th Floor, Calcutta - 700 071
Phone: 2477450/5264

KALURAM RAMLAL
40A, Armenian Street, Calcutta - 700 001
Phone : 238-9089/239-1264

MOTILAL BENGANI
CHARITABLE TRUST
12 India Exchange Place
Calcutta - 700 001, Phone : 220-9255

A.M. BHANDIA & CO.
23/24 Radha Bazar Street, Calcutta - 700 001
Phone : 242 1022/6456/555-4315 (R)

BALURGHAT TRANSPORT LTD.
170/2/C, Acharya Jagadish Bose Road
Calcutta, Phone : 245-1612-15
2, Ram Lochan Mallick Street
Calcutta - 700 073

ABHAY SINGH SURANA
Surana House
3, Mango Lane, Calcutta - 700 001
Phone : 248-1398/7282

SATISH KUMAR SHYAMSUKHA
11, Pollock Street, Calcutta - 700 001

NARENDRA JAIN
Super Iron Factory
7, Rabindra Sarani, Calcutta - 700 001
Phone : 225-3785/0069
Works : 665-3144
Fax : 91-33-2250198, 943333, 954321

ACARDIA SHIPPING LTD.
22, Tulsiani Chambers
Nariman Point, Bombay - 400 021

SUDIP KUMAR SINGH DUDHORIA
Indian Silk House Agencies
129, Rasbehari Avenue
Calcutta, Phone : 464-1186

CALTRONIX
12, India Exchange Place
3rd Floor, Calcutta - 700 001
Phone : 220-1958/4110

BOTHRA & BOTHRA
12, Noormal Lohia Lane
2nd Floor, Calcutta - 700 007
Phone : Shop - 230-0216, (R) : 259657, 259312

GRAPHIC PRINT & PACK
12C, Lord Sinha Road, Calcutta - 700 071
Phone : (O) 242-4916/8380
Resi : 343-8302, Pager : 6902-315070

Dr. ANJULA BINAYIKA
M.D. DND, M.R.C.O.G (London)
12, Prannath Pandit Street
Calcutta - 700 025, Phone : 474-8008

ABHANI BACHHRAJ
Fancy Saree Emporium
156, J.L. Bajaj Street, 1st Floor, Calcutta - 700 007
Ph : Shop- 238-6582, 239-0079
Resi- 483988/2573

CHOPRA TYRES
Unit of Fatehchand Chopra & Family
Tyre Resoler
Sakunta Road, Agartala, (Tripura)

ASHOK TRADING COMPANY
Authorised Distributors of
J.K. Engineering Steel Files & Drills I.T. Cuttings, Tools
Miranda Tools & (Hacksaw Blades) BIPICO-ECLIPSE
18C, Sukeas Lane, Calcutta - 700 001
Ph : 242-2345/4461

BHANWARLAL KARNAWAT
BEEKY TAI FEB UDYOG PVT. LTD.
City Centre, Room No. 534 & 535, 5th Floor
16, Synagauge Street, Calcutta - 700 001
Ph : 238-7281, 230-1739

AKHILESH KUMAR JAIN
JUTE BROKER
9, India Exchange Place, Calcutta - 700 001
Phone : 221-4039, 210-2760, (R) : 660-1604

COMPUTER EXCHANGE
'Park Centre' 24 Park Street
Calcutta - 700 016, Phone : 295047, 299110

PARSAN BROTHERS
Diplomatic & Bonded Stores Suppliers
18-B, Sukeas Lane, Calcutta - 700 001
Ph : (O) 242-3870/4521, Fax : 242-8621

J. KUTHARI PVT. LTD.
12, India Exchange Place
Calcutta - 700 001
Ph: 220-3142, Resi : 475-0995, 476-1803
Fax : 221-4131

SATKAR CONSTRUCTION PVT. LTD.
Gujrat Mansion, 5th Floor
14, Bentick Street, Calcutta - 700 001
Ph : 248-4730/6256/9867, Direct : 248-6477/6169
Resi : 478-0765/458-3397, Mobile : 98300-30618
Fax : 248-6169

AJAY DAGA, AJAY TRADERS
203/1 M.G. Road, Calcutta - 700 007
Phone : (O) 238-9356/0950
(Fact) 557-1697/7059

DUGAR & CO. JUTE BROKER
12, India Exchange Place, (3rd Floor)
Calcutta - 700 001
Phone : 220-1283/0813, Resi : 555-6039

KUMAR CHANDRA SINGH DUDHORIA
7, Camac Street, Calcutta - 700 017
Phone : 242-5234/0329

BALCHAND SOHANLAL
5, Karbala Mohammed Street
Calcutta - 700 001, Phone : 953902/252759
Fax : 033-252902

BHEEKAM CHAND DEEP CHAND BHURA
D. C. Group Pvt. Ltd.
Sagar Estate, 5th Floor
2, Clive Ghat Street, Calcutta - 700 001
Phone : 220-4779/0131/5721

SUNDERLAL DUGAR
R.D.B. Industries Ltd.
Regd. Off : Bikaner Building
8/1 Lal Bazaar Street, Calcutta - 700 001
Ph : 248-5146/6941/3350, Mobile : 9830032021
Office : Tobacco House
1/2, Old Court House Corner
Calcutta - 700 001, Ph : 220-2389/3570/3569

SMT. KUSUM KUMARI DOOGAR
166, Jodhpur Park, Calcutta -700068
Phone: 4720610

GLOBE TRAVELS
Contact for better & Friendlier Service
11, Ho Chi Minh Sarani, Calcutta - 700 071
Phone : 282-8181

SURENDRA SINGH BOYED
Sovna Apartment
15/1 Chakrabaria Lane, Calcutta - 700 026
Phone : 476-1533

APARAJITA BOYD
9/10, Sitanath Bose Lane, Salkia
Howrah - 711 106, Phone : 665-3666/2272

BOYD SMITHS PVT. LTD.
8, Netaji Subhas Road
B-3/5 Gillander House, Calcutta - 700 001
Ph: (O) 220-8105/2139, Resi : 244-0629/0319

B. W. M. INTERNATIONAL
Manufacturers & Exporters
Peerkhanpur Road, Bhadohi - 221401 (U.P.)
Ph : (O) 05414-25178, 25778, 25779
Bikaner Ph : 0151-522404, 25973
Fax: 05414-25378 (U.P.) 0151- 61256 (Bikaner)

RATAN LAL DUNGARIA
16B, Ashutosh Mukherjee Road
Calcutta - 700 020, Ph : (R) 455-3586

ROYAL TOUCH OVERSEAS CORPORATION
47, Pandit Purushottam Roy Street, 2nd Floor,
Calcutta -700 007, Ph : (033) 230-1329, 232-1033
Fax : 91-33-2302413

NAHAR
5/1, A.J.C. Bose Road, Calcutta - 700 020
Ph : 247-6874, Resi : 244-3810

GRAPHITE INDIA LIMITED
Pioneers in Carbon/Graphite Industry
31, Chowranghee Road, Calcutta -700016
Ph : 2264943, 292194, Fax : (033) 2457390

LALCHAND DHARAMCHAND
Govt. Recognised Export House
12, India Exchange Place, Calcutta - 700 001
Ph : (B) 220-2074/8958 (D) 220-0983/3187
Cable : SWADHARMI, Fax : (033) 2209755
Resi : 464-3235/1541, Fax : (033) 4640547

PRITAM ELECT. & ELECTRONICS PVT. LTD.
22, Rabindra Sarani, Shop No. G-136
Calcutta - 700 073, Ph : (033) 262210

मथुरा के जैन स्तूप इस बात के
स्पष्ट और अकाट्य प्रमाण हैं कि
जैन धर्म प्राचीन है और
प्रारम्भ में भी वर्तमान स्वरूप में था ।

Shri Vinsent Smith

卐

RADHIKAS

ICE CREAM PARLOUR &
FAST FOOD CENTRE

SHIVAM CHAMBERS
53, Syed Amir Ali Avenue
(Near Ice Scating Rink)
Calcutta - 700 019
Phone : 247-2602

THE PURE VEGETARIAN PARLOUR FOR CHOICEST & TASTIEST IDLIS, DOSAS, BURGERS, CHATS AND MANY MORE DELICIOUS FOODS WITH VARITIES OF ICE-CREAMS.

जैन संस्कृति मनुष्य संस्कृति है,
जैन दर्शन भी मनुष्य दर्शन ही है,
जिन देवता नहीं थे, किन्तु मनुष्य थे ।

Prof. Harisatya Bhattacharya

We are, always ready to most the Exact type of your requirement

AUCKLAND INTERNATIONAL LTD.

(UNIT : AUCKLAND JUTE MILLS)

'KANKARIA ESTATE'

6, Little Russel Street
Calcutta - 700 001

A Recognised Export House
Cable : SWANAUCK, CALCUTTA
Telex : 21-2396 AUCK IN
Codes : BENTLEY'S SECOND
Phone : 29-2621, 2623, 7199, 7698, 7710

Registered Office &
'JUTE MILL'
At Jagatdal, 24 Parganas
Phone : BHATPARA 2757, 2758 & 2038

एतिहासिक सामग्री से यह सिद्ध होता है कि आप से पांच हजार वर्ष पहले भी जैन धर्म की सत्ता थी ।

Dr. Prannath (Historian)

GYANI RAM HARAKH CHAND SARAOGI CHARITABLE TRUST

P-8, Kalakar Street
Calcutta - 700 007
Phone : 239-6205/9727

Founders of

Shri Gyaniram Harakchand Saraogi College
of Arts & Commerse
Sujangarh

Shri Gyaniram Saraogi Homeo Hall

Shri Gyaniram Saraogi Physiotherapy Centre

भागवत पुराण के अनुसार
ऋषभदेव जैन धर्म के संस्थापक हैं।

Shri Radha Krishnan

HINDUSTAN GAS & INDUSTRIES LTD.
ESSEL MINING & INDUSTRIES LTD.

Registered Office
"Industry House"
10, Camac Street, Calcutta - 700 017
Telegram : 'Hindogen' Calcutta
Phone : (033) 242-8399/8330/5443
Fax : (91) 33 2424998/4280

Manufacturers of
Engineers' Steel Files & Carbon Dioxide Gas
At Tangra (Calcutta)
IronOre and Manganese Ore Mines
In Orissa

S. G. Malleable & Heavy Duty Iron Castings
At Halol (Gujrat)

Ferro Vanadium and Ferro Molybdenum
At Vapi (Gujrat)

High Purity Nitrogen Gas
At Mangalore

H.D.P.E./P.P. Woven Sacks
At Jagdishpur (U.P.

सम्यग्दर्शन के बिना ज्ञान नहीं होता है। ज्ञान के बिना चरित्र के गुण नहीं होते। गुणों के बिना भक्ति नहीं होती और भक्ति बिना निर्वाण शाश्वत् आत्मानन्द प्राप्त नहीं होता।

G.C. Jain

A-40 N.D.S.E - II
New Delhi - 110049
Tel : 625-7095/0330

WB/NC - 330

VOL XXII No. 8

'Titth ayara'

Registered with the registered
of Newspapers for India under
No. R.N. 3018/77

November 1998

अरिहंते सरणं पवज्जामि
सिद्धे सरणं पवज्जामि
साहु सरणं पवज्जामि
केवलि पन्नत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि

"आत्मा के साथ ही युद्ध करो, बाहरी दुश्मनों
के साथ युद्ध करने से क्या लाभ? आत्मा को आत्मा
के द्वारा ही जीत कर मनुष्य सच्चा सुख पा सकता है।"

Kamal Singh Rampuria
Rampuria Mansions
17/3 Mukhram Kanoria Road, Howrah
Phone No. : 666 7212/7225